Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

कुन्ती का संदेश–एक वैयक्तिक मूल्यांकन

डॉ0 अनीता सेनगुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
ईश्वर शरण पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत।

शोध आलेख सार– भगवद्यानपर्व में वर्णित कुन्ती चरित्र से उसकी विद्वता, राजनीतिज्ञता, वीरता, मातृत्व, पुत्रस्नेह एवं धर्मशीलता आदि चारित्रिक गुण प्रकट होते हैं जो अकस्मात् कुन्ती को अद्वितीय भारतीय नारी के उत्तम रूप में प्रतिष्ठापित करते हैं।

मुख्य शब्द– कुन्ती, विद्वता, राजनीतिज्ञता, वीरता, मातृत्व, पुत्रस्नेह, धर्मशीलता।

कुन्ती का चरित्र भगवद्यानपर्व में मुखरित दृष्टिगत होता है। यहाँ वह आदर्श नारी, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति एवं वीरक्षत्राणी के रूप में वर्णित हैं। सर्वप्रथम जब शांतिदूत श्रीकृष्ण हस्तिनापुर में माता कुन्ती का दर्शन करते हैं तब कुन्ती उन्हें देखकर रो पड़ती हैं तथा उनका वीरोचित अतिथि सत्कार करने के पश्चात् अपने पुत्रों को अकारण प्राप्त दुःख का स्मरण करती हैं। उनका विचार है कि वाल्यकाल से ही गुरूजनों का आदर करने वाले, परमस्नेही, सर्वत्र सम्माननीय तथा समदर्शी उनके पुत्र शत्रुओं की शठता के शिकार होकर राज्य से हाथ धो बैठे एवं वनवास को प्राप्त हुए। वे हर्ष एवं क्रोध को जीत चुके थे एवं ब्राह्मणों के हित साधक तथा सत्यवादी थे फिर भी शत्रुाओं के अन्याय से अभिशप्त होकर प्रियजन एवं सुखभोग से वंचित होकर मुझे रोती विलखती छोड़कर वन को चले गए। वन गमन के समय महात्मा पाण्डव मेरे ह्रदय को समूल साथ लेते गए। यद्यपि वे वनवास के योग्य कदापि नहीं थे फिर भी उन्हें यह कष्ट कैसे प्राप्त हुआ? वाल्यकाल में ही वे पिता से वियुक्त हो गए थे एवं मैंने ही उनके कोमल शरीर का पालन–पोषण किया था। पाण्डव ऐसे हिंसक पशुओं से युक्त उस जंगल में कैसे रहे? मेरे बालक वाल्यकाल से ही शंख, दुन्दुभी, मृदंग, तथा वांसुरी के गम्भीर शब्द, मधुरनाद तथा सुरीली ध्वनि से जगाए जाते थे। जब वे कोमल श¸या पर राजभवन में शयन करते थे तब हाथियों की चिग्घाड़ तथा घोड़ों की हिनहिनाहट से उनकी निद्रा भंग होती थी। शंख एवं भेरी की तुमुल ध्वनि तथा वेणु एवं वीणा के मधुर स्वर से उनका उद्बोधन किया जाता था। ब्राह्मण लोग स्वस्तिवाचन तथा शांतिपाठ से उनका समादर करते थे तथा ब्राह्मणों के कल्याणप्रद आशीर्वाद को सुनकर वे उठते थे। पूजित एवं पूजनीय पुरूष उनके गुण गा–गाकर अभिनन्दन किया करते थे तथा वे उठकर रत्न–वस्त्र एवं अलंकारों से ब्राह्मणों का सत्कार किया करते थे। वे ही पाण्डव उस विशाल वन में हिंसक जन्तुओं के क्रूर शब्दों को सुनकर सो भी नहीं पाते होंगे। जो भेरी एवं मुदंगा के नाद से, शंख एवं वेणु की ध्वनि से, स्त्रियों के मधुर गीतों

से एवं सूत मागध तथा बन्दीजनों की स्तुति से जगते थे, वे ही जंगलों में हिंसक जन्तुओं के कठोर शब्द से किस प्रकार आराम पाते होंगे। जो लज्जाशील, सत्य को धारण करने वाले, जितेन्द्रिय तथा सभी प्राणियों पर दया करने वाले हैं जो काम एवं द्वेष को वश में करके सत्पुरूषों के मार्ग का अनुकरण करते हैं, जो अम्बरीश, मान्धाता, ययाति, नहुष, भरत, दिलीप एवं शिवि आदि प्राचीन राजर्षियों के सदाचार पालनरूप कठिन धर्म की धुरी को धारण करते हैं, जिनमें शील एवं सदाचार भरा पड़ा है, जो धर्मज्ञ सत्यप्रतिज्ञ और सर्वगुणसम्पन्न होने के कारण इस भूमण्डल के ही नहीं, तीनों लोकों के भी राजा हो सकते हें, जिनका मन सदैव धर्म में ही लगा रहता है, जो धर्मज्ञान तथा सदाचार सभी दृष्टियों से समस्त कौरवों में श्रेष्ठ हैं, जिनकी अंगकान्ति शुद्ध जम्बूनद सुवर्ण के समान गौर है एवं जो देखने में सबों को प्रिय लगते हैं, वे महाबाहु युधिष्ठिर सम्प्रति कैसे हैं?[1]

हे मधुसूदन! दशहजार हाथियों के बल वाले, वायु के समान वेगवान्, भाईयों का प्रिय करने वाले, कीचक हिडिम्ब एवं बक आदि का वध करने वाले, पराक्रम बल एवं क्रोध में क्रमशः इन्द्र, वायु तथा महेश्वर से समानता रखने वाले, शत्रुसंतापक, तेजयुक्त, अमित तेजस्वी एवं देखने में भयंकर मेरे द्वितीय पुत्र भीम का समाचार मुझे बताओं।[2]

हे कृष्ण! जो अर्जुन दो भुजाओं से युक्त होकर भी सहस्त्रभुजाधारी कार्तवीर्य अर्जुन के साथ प्रतिस्पर्धा रखनेवाले, एक बार में पाँच सौ बाण छोड़नेवाले, सूर्य के समान तेजस्वी तथा इन्द्रिय संयम, क्षमा एवं पराक्रम में क्रमशः महर्षियों, पृथ्वी तथा इनद्र से समानता रखने वाले तुम्हारे भाई एवं सखा की वर्तमान स्थिति कैसी है? कौरवों का यह सम्पूर्ण साम्राज्य उसी के द्वारा फैलाया गया है, सभी पाण्डव उसके बाहुबल पर भरोसा रखते हैं, वह सम्पूर्ण रथियों में श्रेष्ठ, सत्यपराक्रमी, विनयशील तथा अजेय हैं।[3]

मेरा सर्वाधिक प्रियपुत्र सहदेव समस्त प्राणियों के प्रति दयालु, लज्जाशील, महान् अस्त्रवेत्त कोमल, सुकुमार एवं धार्मिक है। महान् धनुर्धर होने के कारण रणभूमि में शोभा पानेवाला, सभी भाइयों का सेवक, धर्म तथा अर्ध में विवेचन में कुशल, युवक, भाइयों में अनुरक्त युद्धों का नेता तथा सदैव मेरी सेवा में तत्पर रहने वाला माद्रीकुमार सहदेव कैसा है?[4]

हे श्रीकृष्ण! सुकुमार, युवक, शौर्यसम्पन्न, दर्शनीय, भाइयों का प्राणस्वरूप, युद्ध की विचित्रकला से संयुक्त, महान् धनुर्धर, महाबली एवं मेरे द्वारा पालित नकुल सकुशल तो हैं? क्या मैं सुख भोग के योग्य एवं दुःख भोगने के अयोग्य इस सुकुमार महारथी को फिर कभी देख सकूँगी? निमेषमात्र के लिए नकुल से अलग होने पर मैं अपना धैर्य खो बैठती थी, किन्तु निर्मम मैं लंबी अवधि तक भी उससे वियुक्त होकर जी रही हूँ।[5]

कुलीन अनुपम सुन्दरी तथा सर्वगुण सम्पन्न राजकुमारी द्रौपदी मुझे पुत्रों से भी अधिक प्रिय है। पुत्रलोक से पतिलोक को श्रेष्ठ मानते हुए वह पुत्रों को छोड़कर पतियों का अनुसरण करती है। उत्तम कुल में उत्पन्न तथा कल्याणमयी उस महारानी द्रौपदी का मैंने विविध उत्तम वस्तुओं से सम्मान किया है। महाधनुर्धर, शूरवीर, युद्ध

कुशल एवं अग्नितुल्य पाँच पतियों से युक्त होकर भी वह दुःखभागिनी बन गई हैं। चौदह पर्षों तक अपने पुत्रों से वियुक्त द्रौपदी को मैं नहीं देख सकी हूँ। वह निश्चय ही अपने पुण्य कर्मों का अक्षय सुख नहीं प्राप्त कर सकी हैं। अपने पुत्रों से भी अधिक प्रिय उस द्रौपदी को भरी सभा में लाए जाने पर मुझे सर्वप्रथम महान् दुःख हुआ था। क्रोध एवं लोभ के वशीभूत पापी दुर्योधन ने रजस्वला और एकवस्त्रा उस द्रौपदी को भरी सभा में श्वसुर के समक्ष खड़ा कर दिया था जिसे सभी कुरूवंशियों ने देखा था। वहीं राजा धृतराष्ट्र, कृपाचार्य, सोमदत्त एवं अन्यान्य कौरव वीर खेद से भरे बैठे थे। मैं तो विदुर को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने इस दुष्कर्म पर अपना विरोध प्रकट किया था। श्रीकृष्ण के आगमन से प्रस्न्न एवं अपने दुःखों से कातर कुन्ती उनसे अपने सम्पूर्ण दुःखों का वर्णन करने लगी। उसने बड़े ही कातर स्वर में पाण्डवों के दुःख, कौरवों के अन्याय तथा पाण्डवों की भावी रणनीति का बड़ा ही स्पष्ट चित्रण श्रीकृष्ण के समक्ष उपस्थापित किया।[6] तत्पश्चात् उन्होंने श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए प्रेरित करते हुए पाण्डवों के पास भी यह सन्द्रह पहुँचाने का अनुरोध उनसे किया। अन्त में श्रीकृष्ण कुन्ती को भावी युद्ध एवं पाण्डवों की राज्य प्राप्ति का आश्वासन देकर दुर्योधन के घर प्रस्थित हुए।

श्रीकृष्ण के द्वारा कौरव सभा में शांति के प्रयास, दुर्योधन को समझाने एवं दुर्योधन के द्वारा शांति प्रस्ताव को अस्वीकार करने के बाद जब श्रीकृष्ण परावर्तित होने लगे तब उन्होंने अपनी पितृश्वसा कुन्ती से पाण्डवों को प्रेषित करने योग्य संदेश की आकांक्षा की। वीर क्षत्राणी कुन्ती ने श्रीकृष्ण को पाण्डवों के लिए निम्नलिखित संदेश देने का अनुरोध करते हुए कहा–

हे केशव! तुम युधिष्ठिर से कहना कि तुम्हारे प्रजापालनरूपी धर्म की हानि हो रही है, अतः तुम धर्म पालन के अवसर को व्यर्थ मत करो। जिस प्रकार वेदार्थ का ज्ञन नहीं रखनेवाले वेदपाठी की बुद्धि केवल मंत्रपाठ में ही व्यर्थ हो जाती है, उसी प्रकार तुम्हारी बुद्धि केवल शांति स्थापना में ही संलिप्त हो गई है। तुम ब्रह्मा के द्वारा क्षत्रियों के लिए स्थापित धर्म का पालन करो एवं बाहुबल से अपनी जीविका का निर्माण करो। क्षत्रिय तो युद्धरूपी कठोर कर्म के लिए रचे गये हैं तथा सदैव प्रजापालनरूपी धर्म में प्रवृत्त होते हैं। इस संबंध में इतिहास में अनेक उदाहरण दृष्टिगत होते हैं। एक बार कुबेर ने राजर्षि मुचुकुन्द पर प्रस्न्न होकर उन्हें सम्पूर्ण पृथ्वी देने का प्रस्ताव रखा, जिसे राजर्षि ने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि मेरी इच्छा अपने बाहुबल से उपार्जित पृथ्वी के उपभोग की है। तत्पश्चात् मुचुकुन्द ने स्वबाहुबल से उपार्जित पृथ्वी का शासन किया।[7] प्रजा द्वारा उपार्जित धर्म का षष्ठांश स्वमेव धर्मपूर्वक शासन करनेवाले राजा को प्राप्त होता है। जो राजा धर्म का पालन करता है वह नरकगामी होता है। राजा की दण्डनीति स्वधर्म के अनुसार प्रवृत्त होकर चारों वर्णों को नियंत्रित करती है। राजा ही सत्ययुग, द्वापर एवं नेत्रा का स्रष्टा है तथा अपने सत्कर्मों से सत्युग के उपस्थापन के कारण उसे स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। द्वापर को स्थापित करने पर उसे पुण्य एवं पाप का मिश्रित फल प्राप्त होता है तथा कलियुग के उपस्थापन में राजा को अत्यन्त कष्ट भोगना पड़ता है। तुम्हारे पिता एवं पितामहों ने जिस धर्म का पालन किया है तुम भी उसी ओर देखो। तुम जिस धर्म का आश्रय लेना चाहते हो वह राजर्षियों का आचार अथवा राजधर्म नहीं है। जो सदैव दयाभाव से युक्त रहता है वह प्रजापालनजनित पुण्य फल को प्राप्त नहीं करता है। तुम जिस बुद्धि पर चल रहे हो उसके लिए

तुम्हारे पितामह, पिता अथवा स्वयं मैंने भी कभी आशीर्वाद नहीं दिया था। मैं तो सदा यही कामना करती हूँ कि तुम्हें ओज, बल, यज्ञ, दान, तप, शौर्य एव बुद्धि की प्राप्ति हो। देवता एवं पितर सदा अपने उपासकों एवं वंशजों से दान, स्वाध्याय, यज्ञ एवं प्रजापालन की अपेक्षा रखते हैं ब्राह्मण भिक्षावृत्ति से जीविका चलाए, क्षत्रिय बाहुबल से प्रजापालन करें, वैश्य धनोपार्जन करें एवं शूद्र इन तीनों वर्णों की सेवा करें यही धर्म है। अतः तुम्हें बाहुबल से प्रजापालन में तत्पर होना चाहिए। तुम्हारा पैतृक राज्य–भाग शत्रुओं के हाथ में पड़कर लुप्त हो गया है जिसे तुम साम, दण्ड एवं भेद से प्राप्त करो। इससे बड़ा दुःख की बात क्या हेागी कि तुम्हारे जैसे वीरों का प्रसव करने वाली मैं आज दूसरों के अन्न–पिण्ड पर जीवित हूँ। अतः तुम वीर बनकर युद्ध करो, कायर बनकर अपने पिता–पितामह की कीर्ति को नष्ट मत करो।[8]

तत्पश्चात् कुन्ती ने विदुलोपाख्यान का वर्णन करते हुए रणभूमि से भागकर आए हुए पुत्र को विदुला की फटकार एवं पुनः उसे युद्ध के लिए उत्साहित करने का प्राचीन इतिहास श्रीकृष्ण को सुनाया। इसी क्रम में विदुला द्वारा कार्य में सफलता प्राप्त करने तथा शत्रु वशीकरण में वर्णित उपायों का भी उल्लेख माता कुन्ती ने किया। इस उपाख्यान के माध्यम से एक तरफ कुन्ती ने पाण्डवों को युद्ध के लिए उकसाया वहीं दूसरी तरफ अपने पुत्रों को युद्ध में विजय के मंत्र का भी उपदेश दिया।[9] अंत में अपने पुत्रों को प्रदेय संदेश का वर्णन करते हुए कुन्ती ने श्रीकृष्ण से कहा– हे केशव! तुम अर्जुन से जाकर कहना कि उसके जन्म के समय यह भविष्यवाणी हुई थी कि वह भीमसेन के साथ युद्ध में आए सभी कौरवों को जीत लेगा। तेरा यह पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण के साथ समस्त भूमण्डल को जीतकर अपना यश स्वर्गलोक तक फैलायेगा एवं अपने पैतृक राज्य का पुररूद्धार करेगा। मेरी इच्छा है कि आकाशवाणी ने जैसा कहा था वेसा ही हो। तुम युद्ध के लिए सदैव उत्सुक भीमसेन से कहना कि क्षत्राणी जिसके लिए पुत्र को जन्म देती है वह समय आ गया है। तुम महाराज पाण्डु का पुत्रवधू परमयशस्विनी द्रौपदी से कहना कि तू परमसौभाग्यशाली यशस्वीकुल में उत्पन्न हुई है एवं तुमने मेरे पुत्रों के साथ जो धर्मानुसार बर्ताव किया है वही तेरे लिए उचित है। तुम क्षत्रिय धर्म में तत्पर रहने वाले माद्रीकुमार नकुल एवं सहदेव से कहना कि तुम अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने पराक्रम से प्राप्त भोगों का ही उपभोग करो। पांचाल राजकुमारी द्रौपदी के राजसभा में हुए अपमान को कौन भुला सकता है। मुझे पाण्डवों के राज्य छिनने एवं वनवास को उतना दुःख नहीं है जितना अपनी प्रिय पुत्रवधू सुन्दरी द्रौपदी के अपमान का है। हे कृष्ण! तुम परम प्रतापी अर्जुन से कहना कि वह द्रौपदी के इच्छित पथ पर चले। भरी सभा में द्रौपदी का जो अपमान हुआ वह अर्जुन एवं भीम का ही अपमान था। मैं उसे पुनः पुनः याद दिला रही हूँ।[10]

इस प्रकार भगवद्यानपर्व में वर्णित कुन्ती चरित्र से उसकी विद्वता, राजनीतिज्ञता, वीरता, मातृत्व, पुत्रस्नेह एवं धर्मशीलता आदि चारित्रिक गुण प्रकट होते हैं जो अकस्मात् कुन्ती को अद्वितीय भारतीय नारी के उत्तम रूप में प्रतिष्ठापित करते हैं।

सन्दर्भ–

1. महाभारत,भगवद्यानपर्व–10. 2–21
2. महाभारत, भगवद्यानपर्व –10. 22–28
3. महाभारत,भगवद्यानपर्व –10. 21–34
4. महाभारत,भगवद्यानपर्व –10. 35–38
5. महाभारत,भगवद्यानपर्व –10. 31–43
6. महाभारत,भगवद्यानपर्व – अध्याय–10.44–54
7. मुचुकुन्दस्य राजर्षेरददात् पृथिवीमिमाम्। पुरा वैश्रवणः प्रीतो न चासौ तो गृहीतवान्।। महाभारत,भगवद्यानपर्व –132
8. महाभारत,भगवद्यानपर्व –अध्याय–132.4–34
9. महाभारत,भगवद्यानपर्व –अध्याय–134–136
10. महाभारत,भगवद्यानपर्व –अध्याय–136